कथा सरिता

मान-अपमान

हमारा आनंद तब तक हमारे हाथों में है जब तक हम दूसरों द्वारा की गई निंदा और स्तुति से स्वयं को प्रभावित न करने दें।

संत लल्लेश्वरी को घरवालों ने दुर्व्यवहार कर घर से निकाल दिया था। भगवद्-भजन में डूबा उनका जीवन कुछ लोगों के लिए श्रद्धा का विषय था, तो कुछ के लिए आलोचना और मजाक का, लेकिन लल्लेश्वरी लोगों के उपहास का कभी बुरा नहीं मानती। एक दिन सुबह वे मंदिर जा रही थी। शहर के कुछ बच्चे उनके पीछे पड़ गए। लल्लेश्वरी चली जा रही थी मानो कुछ हो ही न रहा हो।

बाजार में कपड़े बेचने आए एक व्यापारी से यह देखा न गया। उसने उन बच्चों को डांट लगाई। लल्लेश्वरी वहां खड़े-खड़े सब देख रही थी। सारा मामला शांत हो जाने पर उसने व्यापारी से एक कपड़े का टुकड़ा मांगा और उसके दो बराबर के टुकडे करने को कहा, फिर दोनों कंधों पर एक-एक कपड़ा रखा और मंदिर की ओर बढ़ चली। कई लोग उसे एक महान संत के रूप में जानते थे। जब कोई उसे श्रद्धापूर्वक अभिवादन करता तो वह एक कंधे पर रखे कपड़े में गठान लगा देती। जब कोई व्यक्ति उसका उपहास या कटाक्ष में कोई बात कहता, तो वह दूसरे कंधे पर रखे कपड़े में गांठ लगा देती। इस प्रकार वह मंदिर से दर्शन कर लौटी तो उसके कंधों पर रखे दोनों कपडों पर ढेर सारी गठानें थीं। उसने व्यापारी को दोनों कपड़े दिए और उनका वजन करके लाने को कहा। वह किसी दुकान पर गया और वजन कर आया। लल्लेश्वरी ने उससे पूछा- दोनों के वजन में कोई फर्क है क्या?

व्यापारी बोला दोनों का वजन समान ही है। तब लल्लेश्वरी ने कहा - जीवन में सच्चाई के मार्ग पर चलो तो प्रशंसा और निंदा को एक बराबर समझना। वे दिखाई तो बहुत देते हैं लेकिन यथार्थ में उनका अस्तित्व ही नहीं होता। यदि इस सत्य को समझ लिया जाए तो मन के पटल पर उनका कोई प्रभाव नहीं रहता और मनुष्य स्वयं के आनंद में मगन रहता है।

चौकीदार

सत्य, प्रेम, न्याय और त्याग ऐसे मानवीय सद्भाव हैं जो मनुष्य को 'मानव' से भी ऊपर 'महामानव' बना देते हैं।

एक राजा का राज्य दूर-दूर तक फैला था। उसके राज्य में चहुं ओर शांति थी। उद्योग-धंधे फल-फूल रहे थे और धन की भी कोई कमी नहीं थी। प्रजा प्रसन्न और संतुष्ट थी। उसके राज्य से सटा एक दूसरे राजा का छोटा-सा राज्य था, किंतु उसमें दृश्य सर्वथा विपरीत था। शिक्षा, रोजगार और धन का अभाव था। प्रजा असंतुष्ट थी और राजा परेशान था कि वह अपने राज्य में कैसे सुव्यवस्था स्थापित करे? उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

एक दिन वह राजा बड़े राज्य के राजा से मिलने आया। परस्पर बातचीत में उसने पूछा - मेरा छोटा-सा राज्य है, किंतु उसमें नित्य की उत्पात होते रहते हैं। आपका राज्य इतना बड़ा होने के बावजूद यहां पूर्ण शांति है। इसका क्या कारण है? तब उस राजा ने जवाब दिया - इसका कारण यह है कि मैंने चार चौकीदार तैनात कर रखे हैं, जो हर पल मेरी रक्षा करते हैं। दूसरे राजा ने कहा - मेरे यहां तो चौकीदारों की फौज है। आपका काम चार से कैसे चल जाता है? पहले राजा ने उत्तर दिया - मेरे रक्षक दूसरी तरह के हैं। मेरा पहला रक्षक 'सत्य' है, वह मुझे असत्य नहीं बोलने देता। दूसरा रक्षक 'प्रेम' है, जो मुझे घृणा से दूर रखता है। तीसरा रक्षक 'न्याय' है जो मुझे पद, लिंग, धर्म, जाति, आयु वर्ग आदि किसी भी दृष्टिकोण से अन्याय नहीं करने देता और मैं निर्णय करते समय सर्वथा निष्पक्ष बना रहता हूँ। मेरा चौथा रक्षक 'त्याग' है जो मुझे स्वार्थी होने से बचाता है। इसी कारण मै इस भौतिक संसार में रहते हुए भी सभी प्रकार के लोभ-मोह से परे रहता हूँ। वस्तुत: सत्य, प्रेम, न्याय और त्याग ऐसे मानवीय सद्भाव हैं जो मनुष्य को 'मानव' से भी ऊपर 'महामानव' बना देते हैं और न केवल संबंधित व्यक्ति का इनसे भला होता है बल्कि ये समाज का भी कल्याण करते हैं।

सच तो यह है कि कल्याण 'निज' और 'पर' दोनों स्तरों पर तभी घटित होता है, जब इन भावों की मौजूदगी व्यक्ति के विचार और व्यवहार में होती है।

अहं का दान

वैशाली के दंडनायक ने बुद्ध को अपने घर आमंत्रित किया। साथ ही विशाल धनराशि भी समर्पित करने का आश्वासन दिया। बुद्ध ने कहा - 'हम कृपण की भिक्षा नहीं स्वीकार करते। पहले दान का मर्म समझो और श्रेष्ठतम दान करो।' 'कृपण' शब्द सुनते ही दंडनायक के सहायक चापलूस बिफर उठे -सबसे शक्तिशाली व्यक्ति को बुद्ध ने ऐसा शब्द कहा। उग्रतेजा दंडनायक ने अपने को संभाला और घर आकर पत्नी के सहयोग से दान देना शुरू किया। ऐश्वर्य लुटने लगा। दीन, दरिद्र, भिखारी सभी कृतार्थ होने लगे। समाचार बुद्ध तक भी पहुंचे। फिर दंडनायक बुद्ध के पास पहुंचे। संदेश मिला -'प्रथम कोटि का दान दे सकने का साहस जुटाओ। पात्र-कुपात्र का विचार किए बिना ऐश्वर्य लुटाना दान नहीं है।' दंडनायक लौट गए। मंथन चलता रहा। सोचा अहं का समर्पण करने पर ही सर्वस्व दान हो पाएगा। अगले दिन बुद्ध स्वयं द्वार पर आ गए। पति-पत्नी दोनों उठे, चरणवंदना की और बोले -'प्रभु! सम्पत्ति आपकी, निवास आपका और हम दोनों आपके। हमारे श्रम व समय का सर्वस्व दान आपको। व्यक्तित्व का दान आपको।' महानाम और क्षेमा नाम से दोनों भिक्षुक संघ में सदा के लिए जुड़ गए। उनने दान का मर्म समझ लिया था।

मन की शांति

दुनिया में सारे सुख मिल जाएं, तो जरूरी नहीं है कि शांति भी प्राप्त हो जाए। ये दोनों अलग-अलग बातें हैं। मन की शांति दूसरों के दु:खों को दूर करके भी प्राप्त की जा सकती है। इस सम्बन्ध में एक कथा है, जो शांति की प्राप्ति की राह बताती है।

एक राजा थे। वे अशांत स्वभाव के थे। एक बार उनके नगर में एक भिक्षु आ या। भिक्षु के उपदेश से राजा बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने भिक्षु से पूछा - आपके चेहरे पर जो दिव्य शांति दिखाई दे रही है, क्या वह मुझे भी प्राप्त हो सकती है? यदि हो सकती है, तो इसके लिए मुझे क्या करना होगा? मैं राजा हूँ, तब भी अशांत हूँ। भिक्षु ने जवाब दिया हाँ, बिल्कुल प्राप्त हो सकती है। इसके लिए आपको अकेले में बैठकर चिंतन करना होगा।

दूसरे दिन सुबह ही राजा राजमहल के एक कमरे में अपना आसन जमाकर बैठ गए। कुछ देर बैठे रहे। वे अकेले परेशान होने लगे। तभी उनके राजमहल का एक कर्मचारी उधर सफाई के लिए आया। राजा उससे बात करने लग गए। कर्मचारी के दु:खों को सुनकर उनका मन भर आया। कुछ समय बाद राजा चिंतन करते हुए राजमहल में ही घूमने लग गए। घूमते-घूमते ही उन्होंने अपने राजमहल के हर कर्मचारी के दु:खों के बारे में जाना। सभी कर्मचारियों के दु:खों का मूल कारण खाने के लिए भोजन और पहनने के लिए कपड़ा था। राजा ने अपने कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की और उन्हें कपड़े बाँटे।

शाम को फिर से भिक्षु से मिलने गए। भिक्षु ने पूछा - राजन, आपको कुछ शांति प्राप्त हुई? राजा ने कहा - नहीं महात्मन, मुझे शांति तो प्राप्त नहीं हुई, किंतु अशांति थोड़ी-थोड़ी जाती रही है, जब मैंने मनुष्य के दु:खों के स्वरूप को जाना है। भिक्षु ने कहा - वास्तव में आपने शांति के मार्ग को खोज लिया है, बस अब उस पर आगे बढ़ जाएं। राजा तभी प्रसन्न और शांत रह सकता है, जब उसकी प्रजा प्रसन्न हो। प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है। प्रजा की संतुष्टता से ही राजा संतुष्टता व चैन से रह सकता है।

दिल्ली (सीताराम बाजार)। अलविदा तनाव कार्यक्रम में ब्र.कु.सुनिता, ब्र.कु.लक्ष्मी, ब्र.कु.विमला, विनोद गुप्ता व प्रेम नारायण जी।

आगरा (सेक्टर-7)। समाजसेवी अशोक जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.विमला व ब्र.कु.सरिता। साथ हैं अमर भाई।

विशनाभ (असम)। विधायक पदम हाजरिका, ब्र.कु.सविता व ब्र.कु. दिलीप दीप प्रज्जवलित करते हुए।

सादाबाद। पुस्तक मेले में ब्र.कु.भावना, इंटरकालेज के प्रधानाचार्य राजवीर सिंह गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

मेरठ। डॉ.प्रदीप वर्मा, ब्र.कु.रूकमणि, सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, कृषि विश्व विद्यालय के उपकुलपति हरिशंकर गौड़ दीप प्रज्जवलित करते हुए।

सोलापुर। प्राथमिक विद्यालय में राजयोग शिविर कार्यक्रम के अवसर पर मुख्याध्यापिका वंदना बहन, नगर सेवक शशिकला, ब्र.कु.उज्जवला।